भूमिका

कवि दुष्यंत कुमार से मेरा परिचय स्नातकोत्तर के दौरान हुआ । द्रुत पाठ के तौर पर उन्हें पढ़ना था । उन्हें पढ़ते हुए, उनकी कविताओं के आकर्षण में ऐसी बंधी कि उन्हें विस्तार से जानने की जिज्ञासा निरंतर बढ़ती गई । दुष्यंत कुमार को जब मैंने विस्तार से पढ़ना शुरू किया, तब मुझे लगा कि नई कविता दौर के कवि होने के बावजूद, वे अपने समकालीन कवियों से कई मायने में भिन्न है । उनकी कविताएँ नई कविता के संबंध में प्रचलित अवधारणा को तोड़ती है । उस दौर के कवियों की पहचान 'सप्तकों' से की जाती थी । सप्तकों में स्थान पाने वाले कवियों को अपनी पहचान बनाने के लिए अधिक मेहनत नहीं करनी पड़ी, परंतु ध्यान देनेवाली बात यह है कि सप्तकीय परम्परा के सारे के सारे कवि लोकप्रिय नहीं हो पाये । दुष्यंत कुमार सप्तक के कवि नहीं है, बावजूद इसके वे साहित्यिक जगत एवं पाठक वर्ग के मध्य काफी लोकप्रिय रहे । अपने प्रथम काव्य–संग्रह 'सूर्य का स्वागत' के साथ ही साहित्यिक जगत एवं पाठक वर्ग में इनका जोरदार स्वागत हुआ और अंतिम रचना 'साये में धूप' ने उन्हें जनता के हृदय में स्थायी जगह दिला दी । इसकी मुख्य वजह यह थी कि उन्होंने कवि-कर्म को कभी भी व्यक्तिगत कुंठा प्रकाशन का साधन नहीं बनाया । अपनी कविताओं के द्वारा उन्होंने सामान्यजन की पीड़ा को वाणी दी है, उनके जीवन-यथार्थ को वृहत्तर स्तर पर चित्रित किया । उनकी कविताओं में समकालीन कुंठा, हताशा और व्यक्तिवादिता के स्थान पर सामान्यजन के प्रति प्रेम, करुणा, प्रतिबद्धता, आशा और उत्साह दिखाई पड़ता है । उनकी कविताएँ स्वतंत्रता पश्चात के जनविरोधी समाज के मुखौटे को उघाड़ने में सफल रही है ।

दुष्यंत कुमार आरम्भ से ही अपने रचना–कर्म को आम आदमी के साथ जोड़ते हैं । कबीर, निराला और नागार्जुन की तरह उनकी कविताओं में भी सामान्यजन से गहन लगाव दिखाई पड़ता है । उनकी चेतना के केंद्र में आजादी की त्रासदी और पूँजी परिचालित समाज व्यवस्था की विसंगतियों को झेलने वाला वह सामान्यजन है, जिसे आधार बनाकर लोकतंत्रीय संविधान की स्थापना की गई और बाद में उसे ही लोकतांत्रिक अधिकारों से सरेआम बेदखल कर दिया गया । उनकी कविताओं में किसान-मजदूरों की यातनापूर्ण जिन्दगी के चित्र हैं, बेरोजगारी झेलते हताश, दिशाहीन युवकों की मार्मिक व्यथा है, लोकतंत्र की निरर्थकता को जाहिर करती हुई घटनाएँ है, महँगाई की मार झेलता मध्यवर्ग और निम्न वर्ग की कुंठाएँ और पूँजीवादी षड्यंत्र का यथार्थ है, नैतिक क्षरण और सांस्कृतिक विघटन की सच्चाई है । समकालीन राजनीतिक तथा आर्थिक-सांस्कृतिक-साहित्यिक दुर्दशा को कवि दुष्यंत ने बेबाक और बेखौफ होकर जितनी व्यापकता और ईमानदारी से चित्रित किया है, वह उस दौर के रचनाकारों में नहीं दिखता । दुष्यंत कुमार व्यंग्यात्मक तेवर के साथ तत्कालीन जन विरोधी घटनाओं पर, एक सरकारी मुलाजिम होते हुए, जिस अन्दाज में बेबाक टिप्पणी करते हैं, वह उनकी जन प्रतिबद्धता का प्रमाण है ।

कवि दुष्यंत कुमार की सामाजिक प्रतिबद्धता का प्रमाण उनकी कविताओं में सर्वत्र परिलक्षित होता है । वे जनोन्मुख जनतंत्र की आकांक्षा रखने वाले कवि हैं । इस आकांक्षा की पूर्ति हेतु वे अपनी लेखनी को हथियार बनाकर, सामान्यजन के हितों और अधिकारों को विस्मृत कर अपनी स्वार्थपूर्ति में निमग्न

समाज–संचालकों पर तीखा वार करते हैं । कुल मिलाकर यही कहा जा सकता है कि सामाजिक यथार्थ उनकी रचनाशीलता का मुख्य आधार है । यह आधार उन्हें नई कविता दौर के कवियों से अलग कर, उन्हें कबीर, निराला और नागार्जुन की परम्परा का कवि सिद्ध करता है । मैंने अपने शोध-क़ार्य के लिए उनकी रचनाशीलता के इसी प्रमुख तत्व को आधार बनाया है । उनकी कविताओं में चित्रित सामाजिक यथार्थ के विविध पहलुओं की व्यापक स्तर पर जाँच-पड़ताल करने की कोशिश की है । मेरी जानकारी में दुष्यंत कुमार पर हुए शोध-कार्यों में अधिकांशतः उनके गज़ल संग्रह 'साये में धूप' पर ही केंद्रित है । कुछेक शोध–कार्य उनके सम्पूर्ण काव्य –संसार को लेकर किये गये हैं, पर उन शोध–ग्रंथों एवं आलोचनात्मक पुस्तकों में प्रस्तुत विषय का प्रसंगवश उल्लेख मात्र हुआ है । सामाजिक यथार्थ के व्यापक परिदृश्य को सामने रखकर उनकी समग्र कविताओं के अवलोकन का अभाव दिखाई पड़ता है । मेरा शोध–कार्य इस अर्थ में नया होगा क्योंकि मैंने उनकी समग्र कविताओं को आधार बनाकर सामाजिक यथार्थ के आइने में उन्हें परखने की कोशिश की है । मैंने उनकी आरंभिक अपूर्ण कविताओं को भी उदाहरण के तौर पर उपयोग किया है ।

'दुष्यंत कुमार की कविता में सामाजिक यथार्थ' विषय को अध्ययन की सुविधा के लिए मैंने सात अध्यायों में विभाजित किया है । मेरे प्रथम अध्याय का शीर्षक है –'सामाजिक यथार्थ : अर्थ एवं स्वरूप' । इस अध्याय के अंतर्गत यथार्थ और सामाजिक यथार्थ के स्वरूप पर प्रकाश डाला गया है । साहित्य में प्रचलित विविध प्रकार के यथार्थ पर विचार करते हुए सामाजिक यथार्थ की महत्ता

और साहित्य के साथ उसके संबंध पर विस्तारपूर्वक विचार किया गया है । साथ ही साथ हिन्दी साहित्य में भक्तिकाल से लेकर समकालीन कविता तक में सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति पर भी मैंने अध्ययन किया है । द्वितीय अध्याय 'दुष्यंत कुमार की काव्य-यात्रा' के अंतर्गत मैंने दुष्यंत कुमार की आरम्भिक अधूरी और असंकलित कविताओं से लेकर, उनके तीनों काव्य-संग्रह, एकमात्र गज़ल–संग्रह, एकमात्र गीतिनाट्य का मूल्यांकन किया है । कविताओं से इतर दुष्यंत कुमार ने जो गद्य लिखे हैं, उस पर भी चर्चा की गई है । तृतीय अध्याय 'दुष्यंत कुमार की कविता में सामाजिक यथार्थ' में उनकी कविताओं में निहित राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक यथार्थ के बहुआयामी पक्षों पर विस्तृत अध्ययन–विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है । चतुर्थ अध्याय 'दुष्यंत कुमार की कविता में व्यंग्य' के अंतर्गत व्यंग्य को परिभाषित करते हुए, उसके उद्देश्य पर गहनता से विचार किया गया है । तत्पश्चात् दुष्यंत कुमार की कविता में निहित राजनीतिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक व्यंग्य पर विस्तार से चर्चा की गई है । पंचम अध्याय 'दुष्यंत कुमार की कविता के कुछ अन्य पहलू' में, उनकी कविताओं में अभिव्यक्त प्रेम और सौंदर्य के विविध रूपों पर प्रकाश डाला गया है । इस अध्याय के अंतर्गत उनकी कई प्रशंसात्मक कविताओं पर अध्ययन प्रस्तुत किया गया है । षष्टम अध्याय में दुष्यंत कुमार की जीवन–दृष्टि को अभिव्यक्त किया गया है । अंतिम अध्याय जो कि सप्तम् अध्याय है, के अंतर्गत उनकी कविताओं के शिल्प पक्ष पर विचार किया गया है ।

इस शोध–कार्य की ओर प्रवृत्त करने का श्रेय मेरे स्वर्गीय पिताजी श्री हरेंद्र राय शर्मा का है, जो मेरे इस सफर का आगाज कराकर इस दुनिया को अलविदा कह गये । उन्होंने मुझे हमेशा प्रोत्साहित किया प्रत्यक्ष रहकर भी और परोक्ष रहकर भी । वे इस संसार से तो चले गये, पर एक अदृश्य शक्ति बनकर मुझे इस कार्य को अंजाम तक पहुँचाने के लिए हमेशा उकसाते रहे । मेरे इस कार्य में मेरे पिताजी के अलावा मेरे परिवार वालों का बहुत योगदान रहा है । उन्होंने हमेशा निराशा के क्षणों में मुझे सम्भाला और मुझे इस कार्य के लिए यथासम्भव सहयोग किया । मेरे पति श्री अनंत कुमार ने इस कार्य में बहुत सहयोग किया । अगर उनका सहयोग नहीं होता तो यह कार्य अपनी अंतिम परिणति तक नहीं पहुँचता । वैसे उनके प्रति आभार प्रकट करना महज एक औपचारिकता ही होगी । मैं अपने सहेलियों प्रियंका, विनीता, मेनका, सुलोचना, प्रेरणा, बबीता आदि के प्रति आभार प्रकट करती हूँ, जिन्होंने न केवल मेरा उत्साह बढ़ाया, बल्कि कई महत्त्वपूर्ण पुस्तकें और पत्रिकाएँ भी उपलब्ध कराई । मेरे महाविद्यालय के सहकर्मियों ने न केवल मुझे बार –बार उत्साहित किया, बल्कि महत्वपूर्ण सुझाव देकर मेरे कार्य को गति प्रदान की । उन्हें भी शुक्रिया । हमारे विभाग के शोधार्थी भैया विनय कुमार पटेल के प्रति भी आभार प्रकट करना मेरा कर्तव्य बनता है, अग्रज शोधार्थी होने के नाते उनके अनुभव का मुझे कई बार फायदा हुआ । कई तरह की तकनीकी असुविधाओं में उन्होंने मेरी सहायता की है और हमेशा मुझे इस कार्य को अच्छे ढ़ंग से पूरा करने के लिए उत्साहित करते रहे । विभागीय प्राध्यापक डॉ. सुनील

कुमार द्विवेदी ने भी हमेशा मुझे प्रोत्साहित किया, अत: मैं उनके प्रति भी आभार प्रकट करती हूँ । अपने बेटे अभिनव को भी मैं धन्यवाद कहना चाहती हूँ, इस कार्य की वजह से वह कई बार मेरी उपेक्षा का शिकार हुआ ।

वरिष्ठ कथाकार सूरज प्रकाश जी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ कि उन्होंने मेरा परिचय भोपाल अवस्थित दुष्यंत कुमार स्मृति संग्रहालय के निदेशक राजुरकर राज जी से करवाया । राजुरकर जी ने दुष्यंत कुमार के मित्र वरिष्ठ आलोचक धनंजय वर्मा और दुष्यंत रचनावली के संपादक और आलोचक विजय बहादुर सिंह का फोन नम्बर उपलब्ध करवाया । उनके इस आत्मीय सहयोग से मेरे कार्य को नई दिशा और गति मिली । राजुरकर जी का तहे दिल से धन्यवाद । वरिष्ठ आलोचक धनंजय वर्मा और आलोचक विजय बहादुर सिंह के प्रति आभार प्रकट करती हूँ कि उन्होंने अपने व्यस्त समय से समय निकालकर मेरे द्वारा भेजे गये प्रश्नों का शीघ्रातिशीघ्र उत्तर ही नहीं दिया, अपितु मुझ तक जल्द से जल्द पहुँचाने का कार्य भी किया । मेरी शोध निदेशक डॉ. मनीषा झा का एक महिला होना मेरे लिए बहुत ही फायदेमन्द रहा । कभी निदेशक की भूमिका में बेहतर शोध–कार्य के लिए उकसाती रही तो कभी पारिवारिक उलझन के क्षणों में एक बड़ी बहन की तरह सम्भालती भी रही । उन्होंने इस कार्य का निर्देशन करते समय मेरी सुविधाओं–असुविधाओं का बहुत ख्याल रखा । उनके प्रति मैं कितनी भी आभार प्रकट करूँ, कम है ।

मैं यह शोध–प्रबंध सविनय विद्वजनों के समक्ष प्रस्तुत कर रही हूँ । यह शोध–प्रबंध मेरे अथक परिश्रम का परिणाम है । इसे प्रस्तुत करने में अपनी

तरफ से काफी सावधानी बरती गई है, बावजूद इसके अगर कोई त्रुटि नजर आए तो इसके लिए मैं हृदय से क्षमाप्रार्थी हूँ।

...शशि शर्मा.....

(शशि शर्मा)

उत्तर बंग विश्वविद्यालय,
राजा राममोहनपुर,
जिला–दार्जिलिंग
दिनांक 18/03/14..

पंजीकरण संख्या : Ph:D/Hindi(7)/3741/R-2012-